अध्याय- दूसरा

रांगेय राघव का साहित्यगत- परिचय।

// अ ध्या य - दू स रा //

-: रांगेय राघव का साहित्यगत परिचय :-

१] रांगेय राघव :-

डॉ. रांगेय राघवने अल्पायु में ही विपुल साहित्य का निर्माण किया है। उनकी रचनाओं में सम्पूर्ण विषय शाखाओं को साहित्यगत रूप देकर परिचित कराने का प्रयास किया गया है। साहित्येतर विषयों कीओर भी उन्होंने ध्यान दिया है।

डॉ. रांगेय राघवने स्वयं तैयार की हुयी अपनी रचनाओं की सूची यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। " इन रचनाओं के अतिरिक्त अन्य प्रकाशित अप्रकाशित रचनाओं का साहित्यगत परिचय क्रम से दिया जा रहा है। इस लघु - प्रबन्ध में " कथाकार रांगेय राघव " लेखक डॉ. कमलाकार गंगावणे के प्रसिध्द प्रबन्ध से प्राप्त जानकारी के आधार पर डॉ. रांगेय राघव की मुल सुची और प्रकाशन विवरण भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

२] प्रेरक तत्व :-

प्रथम अध्याय में डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तिगत परिचय का विवेचन किया गया है। " उनके साहित्यकार " रूप के प्रेरक तत्वों में पारिवारिक परिवेश तथा प्रतिभाओं का योगदान है। " सम्बान्धित जानकारी नीचे दी जा रही है।

" डॉ. रांगेय राघव के साहित्यकाररूप का प्रेरक तत्व अपने परिवार के सदस्यो से रांगेय राघवने कुछ न कुछ सीखा है। उनके पूर्वजो में से कोई न कोई सदस्य किसी न किसी कला में निष्णान्त रहा है। पारिवारिक सदस्यों का कलात्मक अभिरूचियों तथा उनके वंशानुगत संस्कारों

का विवरण इस प्रकार है।

नाना :-

उनके नाना एक चित्रकार व एक कुशल वीणावादक भी थे।

मामा :-

उनके मामा कुशल मृदंगवादक थे।

माता :-

उनकी माता साहित्यिक अभिरुचि रखनेवाली महिला थी।

पितामह :-

उनके पितामह संस्कृत के साहित्यकार थे।[२]

३] प्रथम रचना :-

" डॉ. रांगेय राघव के सृजनात्मक कार्य का आरम्भ सन १९३७ के आसपास , १४ वर्ष की अवस्था में हुआ। विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने लिखना आरम्भ करदिया था। उनकी प्रथम रचना - " जो एक गीत थी - साप्ताहिक विश्वमित्र " कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली पत्रिका में छपी थी। इसी काल में उन्होंने पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित होकर " बोलते खण्डहर " और सन १९३८ में " अँधेरे की भूख " नाम रचनाएँ लिखी द्वितीय विश्वयुध्द एवं रूस की क्रान्ति पर आधारित " अजेय खण्डहर " [काव्य- संग्रह] तथा " साम्राज्य का वैभव " [कहानी संग्रह] नामक दोसकंलन प्रकाशित किए। इसी वर्ष " प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड " लिखी। " तूफानों के बीच " [रिपोर्ताज, " विषाद मठ " [उपन्यास] " हंस " में उनकी रचनाएँ छपी है। यहाँ से वे गद्य लेखक के रूप में ख्यात हो जाते है। सन १९४८ में उनका प्रथम मौलिक उपन्यास " घरौंदे " प्रकाशित हुआ। घरौंदे से " आखिरी आवाज " तक वे लगातार लिखते रहें हैं।[३]

४] रचनाओं की सूची :-

डॉ. रांगेय राघवजी ने अपनी रचनाओं की सूची स्वंय तैयार की है। यह सूची श्रीमती सुलोचना राघव द्वारा डॉ. कमलाकर गंगावणेची को प्राप्त हुयी है। डॉ. कमलाकर गंगावणेजी के " कथाकार रांगेय राघव : " रचनाएँ " शीर्षक में जो सूची क्रम दिया है, वही सूची दी जा रही है।

डॉ. रांगेय राघवजीने अपनी सूची में प्रकाशकों का विवरण भी दिया है। यह विवरण अंग्रेजी वर्णमाला में संकेत रूप में है। ज्ञात प्रकाशकों का विवरण रचनाओं के आगे इन संकेतों कों का विवरण रचनाओं के आगे इन संकेतों को स्पष्ट करते हुए दिया जा रहा है। प्रकाशक के नामों के लिए जिन संकेतों का उपयोग किया गया है, प्राय : उन प्रकाशकों से सम्ब-न्धित रचनाएँ एक स्थान पर लिखी गई है। कुछ अप्रकाशित रचनाएँ भी हैं और जिनकी पाण्डुलिपियाँ आज भी प्रकाशकों के पास हैं। इनका विवरण भी सम्बन्धित रचनाओं के साथ प्रस्तुत है। [४]

क्रम	डॉ रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध मे विवरण
	व्ही पी ए	व्हीपीए का संकेत - विनोद पुस्तक मंन्दिर आगरा के लिए है।
१.	विजयिनी	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा से छपी है।
२.	इन्द्रधनुष्य	- वही
३.	संस्कृति और समाजशास्त्र भाग - १ गो.	यह पुस्तक श्री गोविन्द शर्मा के सहयोग से लिखी गई हैं। मूल सूची में "गो" का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।

	भाग - २	वही
४]	संस्कृति और मानवशास्त्र, गो.	- वही
५]	अपराधशास्त्र, श्या.	यह पुस्तक श्री श्याम शर्मा के सहयोग से लिखी गई है। मूल सूची में "श्या" का संकेत इसी सन्दर्भ में दिया गया है।
६]	सामाजिक समस्याएँ और विघटन, - श्या.	- वही
७]	सामाजिक समस्याएँ और रीतिरिवाज - मु.	यह पुस्तक श्री मुरारी प्रभाकर के सहयोग से लिखी गई है। मूल सूची में "मु " का संकेत इसी सन्दर्भ में दिया गया है।
८]	महाकाव्य विवेचन	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मन्दिर से छपी अ है।
९]	काव्य, यथार्थ और प्रगती	- वही
१०]	समीक्षा और आदर्श	- वही
११]	बन्दुक और बीज	- वही
१२]	बौजे और पायफुल	- वही
१३]	मेरी भव बाधा हाते	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मन्दिर से छपी है।
१४]	रत्ना की बात	- वही
१५]	लोई का ताना	- वही
१६]	लक्ष्मा की - आँखें	- वही
१७]	जब आवेगी काली घटा	- वही

१८]	धूनी का धुआँ	- वही
१९]	काव्य, कला और शास्त्र	- वही
२०]	देवकी का बेटा	- वही
२१]	यशोधंरा जीत गई	- वही
२२]	भारती का सपूत आरपीएसडी[	- वही - आरपीएसडी- का संकेत - राजपाल एण्ड सन्स, दिल्लीके लिए है।
२३]	तूफान	टेमपेष्ट - शेक्सपियर
२४]	एक सपना	म मिड समर नाईट - ड्रीम- शेक्सपियर
२५]	परिवर्तन	टेमिंग ऑफ दि श्रु- शेक्सपियर
२६]	तिल का ताड	मच एडो अबाऊट नथिंग शेक्सपियर
२७]	भूल भूलैया	दि कामेडी आफ इरार्स - शेक्सपियर
२८]	निष्फल प्रेम	लव्हज लेबर्स लास्ट - शेक्सपियर
२९]	बारहवी रात	टवैल्थ नाइट - शेक्सपियर
३०]	जैसा तुम - चाहो	एज यू लाइफ इट्- शेक्सपियर
३१]	वेनिस का सौदागर	मर्चेंट आफ वेनिस - शेक्सपियर
३२]	रोमियो ज्यूलियट	रोमियो अण्ड जूलियट - शेक्सपियर

३३]	जूलियस सीजर	जूलियस सीजर - शेक्सपियर
३४]	सम्राट लियर	किंग लियर- शेक्सपियर
३५]	मेकबेथ	मेकबेथ - शेक्सपियर
३६]	हेमलेट	हेमलेट - शेक्सपियर
३७]	आथेलो	आथेलो - शेक्सपियर
३८]	मुद्रा राक्षस	मुद्राराक्षस - विशाखादत्त
३९]	मृच्छ कटिक	मृच्छ कटिक - शुद्रक
४०]	मन में बंधन	लायलिटिज - गाल्सवर्दी
४१]	दशकुमार चरित	दशकुमारचरित - दण्डी
४२]	संसार के महान उपन्यास	इस पुस्तक में विश्व साहित्य के श्रेष्ठ उपन्यासों का संक्षिप्त कथासार दिया है।
४३]	नकली उपग्रह राकैट और बाहरी	स्पेश - वायली ले यह पुस्तक ज्ञान-विज्ञान माला ११ के अन्तर्गत "राकैट की कहानी" शीर्षक से छपी है।
४४]	मेरी प्रिय सर्व श्रेष्ठ कहानियाँ	यह रचना उनके जीवन काल में नहीं छपी। इसका प्रथम संस्करण सन १९७० में उनकी मृत्यू के ८ वर्षबाद प्रकाशित हुआ।
४५]	आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और शृंगार	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, से छपी हैं।

४६]	आधुनिक हिन्दी कविता में विषय और शैली	- वही
४७]	पाँच गद्य	- वही
४८]	बन्धन मुक्ता	इस रचना की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राघवने प्रकाशनार्थ "राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के पास दी है।
४९]	पक्षी और आकाश	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
५०]	राई और पर्वत	- वही
५१]	राह न रुको	- वही
५२]	पथ का पाप	- वही
५३]	छोटी - सी बात	यह पुस्तक हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा॰ लि॰ दिल्ली से छपी है।
५४]	धरती मेरा घर	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
५५]	कब तक पुकारूँ	- वही
५६]	प्रोफेसर	- वही
५७]	कल्पना	- वही
५८]	दायरे	यह पुस्तक हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा॰ लि॰ दिल्ली से छपी हैं।
५९]	आग की प्यास एपीबीडी	यह पुस्तक अशोक पाकेट बुक्स, दिल्ली से छपी है। मूल सूची में "एपीबीडी" का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया हैं।

६०]	होरेस काव्यकला डीयु	इस पुस्तक को पाण्डुलिपी श्रीमती सुलोचनाराधव के पास है। डीयु का अर्थ स्पष्ट नहीं है।
६१]	केपीजे काव्य कला	"केपीजे " जयपूर के किसी प्रकाशक का नाम हैं, जिसका ठिक-ठिक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है।
	एस.पी.	"एस.पी " का ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है। किन्तु यह ज्ञात है कि मूलाक्षर एस.पी. के प्रकाशन संस्थाएँ "सरस्वती प्रेस बनारस " "सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा" से इनकी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुई है।
६२]	घरौंदा	इसका प्रथम संस्क रण सन १९४६ में सरस्वती प्रेस, बनारस से छपी हैं। बाद में यह "राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपा हैं।
६३]	तुलसीदास का कथाशिल्प	यह पुस्तक म.प्र.साहित्य प्रकाशन विलासपूर से सन १९५९ में प्रकाशित हुयी है।
६४]	उबाल	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
६५]	विस्फ़ोक	यह पुस्तक साहित्य कार्यालय, आगरा से छपी है।
६६]	कालविजय	- वही
६७]	समुद्र के फेन	- वही

६८]	पराया	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
६९]	राह के दीपक	- वही
७०]	मेधावी	- वही
७१]	पांचाली	- वही
७२]	किरणें बुहारलो	यह सचित्र काव्य संग्रह है। इसकी पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचनाराधव के पास है।
	ए टी एस डी	" एटीएसडी " का संकेत आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली के लिए है। अनुक्रम ७३ से ७८ तक के पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ उन्हीं के पास है।
७३]	युरोपिय कथाएँ	- वही
७४]	एशियाई कथाएँ	- वही
७५]	ईरानी कथाएँ	- वही
७६]	फारसी कथाएँ	- वही
७७]	फ्रेंच कथाएँ	- वही
७८]	हैलेनिक कथाएँ	- वही
७९]	आयवंन्ही	आयवन्ही ÷ सर वाल्टर स्काट इस पुस्तक की पाण्डुलिपी श्रीमती सुलोचना राधव के पास है।
८०]	एण्टीगोने	एण्टीगोने - सोफोक्लिज.
८१]	ईडीपस	इडीपस - सोफोक्विलन " ईडीपस पाप, प्रेम, और मृत्यु " शीर्षक से प्रकाशित हुई है।

८२]	ऋतुसंहार	ऋतुसंहार - कालीदास, इसमें सचित्र हिन्दी-अंग्रेजी पदयानुवाद है। डॉ. रांगेय राघव के मरणोपरान्त सन १९७३ में "आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली " से प्रकाशित हुई है।
८३]	चीनी कवि लाओत्सु का काव्यलोक	पुस्तक अप्रकाशित है और इसकी पाण्डुलिपी आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली के पास है।
८४]	कोमल कवि स्टीवेन्सन का काव्यलोक	- वही
८५]	महाकवि होमर का काव्यलोक	- वही
८६]	महाकवि टेनिस का काव्यलोक	- वही
८७]	महाकवि का काव्यलोक	- वही
८८]	महाकवि मायकोवस्की का काव्यलोक	- वही
८९]	महाकवि युरिपिडिज का काव्यलोक	पुस्तक अप्रकाशित है और इसकी पाण्डुलिपी आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली के पास है।
९०]	महाकवि शेक्सपियर का काव्यलोक	- वही
९१]	महाकवि चौसर का काव्यलोक	- वही
९२]	आँधी की नीवें	यह पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से प्रकाशित हुई है।
९३]	काका	- वही

९४]	एक छोड एक	- वही
९५]	गोरखनाथ	" गोरखनाथ और उनका युग " डॉ॰ रांगेय राघव का शोध-प्रबन्ध का विषय था। उक्त विषय पर उन्होंने लिखा। शोध - प्रबन्ध, आगरा विश्वविद्यालय ने सन १९४८ में पी-एच॰ डी॰ उपाधि के लिए स्वीकृत किया। यह ग्रंथ सन १९६३ में रांगेय राघव की मृत्यु के एक एक वर्ष बाद " आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से छपा है।
९६]	प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास	यह पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
९७]	भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका	- वही
९८]	हिन्दी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपीठिका के एम ए	इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली के पास है। " केएमए " का संकेत " किताब महल इलाहाबाद " के लिए है।
९९]	अंधेरे की भूल	यह पुस्तक किताब महल, इलाहाबाद से छपी है।
१००]	बोलते खण्डहर	यह पुस्तक सन १९७६ में राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
१०१]	शिल्पी का प्रेम	एग्रोडाईट - पीयरे - लुई
१०२]	रूप की ज्वाला	सी गार्ड
१०३]	अन्तर्मिलन की कहानियाँ	यह पुस्तक किताब महल, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई है।

१०४] संसार की प्राचीन कहानियाँ - वही

१०५] प्राचीन प्रेम और नीती कहानियाँ - वही

१०६] प्राचीन ट्यूटन कहानियाँ - वही

१०७] प्राचीन ब्राम्हण कहानियाँ - वही

१०८] प्राचीन युनानी कहानियाँ - वही

१०९] अंगारे न बुझे -ॅ वही

११०] तूफानों के बीच - वही

१११] इन्सान पैदा हुआ - वही

११२] भारतीय संत परम्परा और समाज - वही

११३] संगम और संघर्ष - वही

११४] महायात्रा / अँधेरा रास्ता - वही

११५] महारात्रा : अँधेरा रास्ता रैन और चंदा - वही

११६] ऐयाश मुर्दे - वही

११७] हुजुर इसका प्रथम संस्करण सन १९५२ में आलोक प्रकाशन बीकानेर से छपा था बाद में यह सन १९७६ में राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपा है।

११८] विशाद मठ इसका प्रथम संस्करण सरस्वती प्रेस, बनारस से छपा था। बाद में यह सन १९७३ में राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली से छपा।

११९]	सीधा सादा रास्ता	यह पुस्तक किताब महल, इलाहाबाद से छपी है।
१२०]	प्रतिदान	यह पुस्तक सन १९७६ में शब्दकार दिल्ली से छपी है।
१२१]	चीवर	यह पुस्तक सन १९७३ में उक्त प्रकाशन द्वारा छपी है।
१२२]	अंधेरे के जुगनू	यह पुस्तक किताब महल, इलाहाबाद से छपी है।
१२३]	मुर्दों का टीला	- वही
१२४]	रामानुज	- वही
१२५]	स्वर्ग भूमि का यात्री	- वही
१२६]	परछाया	- वही
१२७]	मिटते चिन्ह	पुस्तक अप्रकाशित है और उसकी पाण्डुलिपि किताब महल, इलाहाबाद के पास है।
१२८]	आर्या	- वही
१२९]	अजेय खण्डहर	यह पुस्तक किताब महल, इलाहाबाद से छपी है।
१३०]	पिघलते पत्थर	- वही
१३१]	पंचशिला	- वही
१३२]	यात्रा के पल	इस पुस्तक की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राघव के पास है।
१३३]	मृत्युंजय ज्वाला	- वही

आ] इस सूची के अतिरिक्त कुछ और भी रचनाएँ मिलती है।
वे इसप्रकार हैं :-

१३४]	~~पतझर~~ आखिरी आवाज	यह पुस्तक लेखक की मृत्यु के बाद सन १९६८ में राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है। यह उनका अंतिम उपन्यास है।
१३५]	पतझर	यह पुस्तक राजपालएण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
१३६]	मेघदुत	मेघदुत - कालिदास - यह पुस्तक आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
१३७]	कुमार संभव	" कुमार संभव " कालिदास " इस पुस्तक की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राधवने प्रकाशनार्थ राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली के पास दी है।
१३८]	गीतगोविंद	"गीतगाविन्द -जयदेव " यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली सेछपी है।
१३९]	प्रगतिशील साहित्य के मानदंड	यह पुस्तक सरस्वती पुस्तक सदस आगरा से सन १९५४ में छपी है।
१४०]	देवदासी	यह पुस्तक सरस्वोती प्रेस, बनारस से छपी है।
१४१]	साम्राज्य का वैभव	- वही
१४२]	जीवन के दाने	यह पुस्तक कारवाँ प्रकाशन, इन्दौर से सन १९४९ में छपी है।

१४३]	अधूरी मूरत	यह पुस्तक सुलभ प्रकाशन मंडल इन्दौर से सन १९५५ में छपी है।
१४४]	चंद्रावली नाटिका	प्रकाशक का नाम ज्ञात नही है।
१४५]	काव्य के मूल विवेन्य	- वही
१४६]	आखिरी धब्बा	- वही
१४७]	प्राचीन रोमन कहानियाँ	- वही
१४८]	श्यामला	इस पुस्तक की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राधव के पास है।

इ] अप्रकाशित रचनाएँ जिनका विवरण लेखक डॉ. कमलाकर - - गंगावनेजी की सुलोचना राधव से प्राप्त हुआ है।

१४९]	भामिनी/विलास	भामिनी विलास - पंडितराज जगन्नाथ इस पुस्तक की पाण्डुलिपी श्रीमती सुलोचना राधवने भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन के संचालक श्रीअलोक जैन को प्रकाशनार्थ दी है।
१५०]	उत्तरायण	यह अधूरी रचना है। इसकी पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राधव के पास है।

ई] ऐसी रचनाएँ जिनका उल्लेख विद्वानों में प्राप्त है। किन्तु देखने में नहीं आयी। इसप्रकार की तीन रचनाएँ है।

१] धूनी और धुआँ

२] कुम्हार की भूल

३] अंधे का गीत

" इन तीनों रचनाओं का उल्लेख विनोद पुस्तक मन्दिर , आगरा द्वारा प्रकाशित " जब आवेगी काल घटा " के रैपर पर प्राप्त है।" प्रथम रचना कुछ परिवर्तीत नाम के साथ छपी है - धूनी का धुआँ - धूनी का धुआँ " नाम से प्रकाशित है। "

५] प्रस्तुत लघु - प्रबन्ध से सम्बन्धित रचनाएँ :-

डॉ. रांगेय राघव ने " मेरी प्रिय कहानियाँ " संकलन सहित कुल गयारह कहानी संग्रहों का संकलन किया है। अधिक जानकारी के लिए उपन्यास, कहानी रचनाओं का क्रम प्रकाशन वर्ष के आधार पर किया है। इसमें कुछ रचनाएँ बहुत पहले लिखी गयी हो और कई वर्ष बाद छपी हो। लेकिन यहाँ प्रकाशन वर्ष पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इनका विभाजन " उपन्यास " तथा " कहानी " के रूप में किया गया है।

अ] उ प न्या स :-

क्रम	उपन्यास शीर्षक	प्रकाशन वर्ष
१]	घरौंदे	सन १९४६
२]	विषाद मठ	सन १९४५
३]	मुर्दों का टीला	सन १९४८
४]	सीधा साधा रस्ता	सन १९५१
५]	चीवर	सन १९५१
६]	हुजूर	सन १९५२
७]	काका	सन १९५३
८]	अँधेरे के जुगनू	सन १९५४
९]	उबाल	सन १९५४
१०]	देवकी का बेटा	सन १९५४

११]	यशोधरा जीत गई	सन १९५४
१२]	लोई का ताना	सन १९५४
१३]	रत्ना की बात	सन १९५४
१४]	भारती का सपूत	सन १९५४
१५]	बोलते खण्डहर	सन १९५५
१६]	अँधेरे की भूल	सन १९५५
१७]	प्रतिदान	सन १९५६
१८]	बौने और घायल फूल	सन १९५७
१९]	कब तक पुकारूँ	सन १९५७
२०]	लक्ष्मा की आँखें	सन १९५७
२१]	बंदूक और बीन	सन १९५८
२२]	राई और पर्वत	सन १९५८
२३]	पक्षी और आकाश	सन १९५८
२४]	राह न रुकी	सन १९५८
२५]	जब आवेगी काली घटा	सन १९५८
२६]	छोटी सी बात	सन १९५९
२७]	धूनी का धुआँ	सन १९५९
२८]	पथ का पाप	सन १९६०
२९]	महायात्रा : अँधेरा रास्ता	सन १९६०
३०]	महायात्रा : रैन और चंदा	सन १९६०
३१]	मेरी भव बाधा हरो	सन १९६०

३२]	धरती मेरा घर	सन १९६१
३३]	दायरे	सन १९६१
३४]	आग की प्यास	सन १९६१
३५]	कल्पना	सन १९६१
३६]	आँधी की नावे	सन १९६१
३७]	पतझर	सन १९६२
३८]	प्रोफेसर	सन १९६२
३९]	पराया	सन १९६२
४०]	आखिरी आवाज	सन १९६२

ब] ग्यारह कहानी संग्रह :-
==========

१]	साम्राज्य का वैभव	सन मई, १९४७
२]	समुद्र के फेन	सन १९४७
३]	देवदासी	सन १९४७
४]	जीवन के दाने	सन मार्च, १९४९
५]	अधूरी मुरत	सन १९४९
६]	अंगारे न बुझे	सन १९५१
७]	ऐयाश मुर्दे	सन १९५३
८]	इन्सान पैदा हुआ	सन १९५७
९]	पाँच गधे	सन १९६०
१०]	एक छोड एक	सन १९६३
११]	मेरी प्रिय कहानियाँ	सन १९७० [प्रथम]
		सन १९७६ [ती॰ सं]

शिवाजी युनिव्हरसिटी लाइब्ररी, कोल्हापुर में उपरोक्त ग्यारह कहानी संकलन शीर्षक लेखक- " डॉ. रांगेय राधव की सम्पूर्ण कहानियाँ. " पहला भाग - " सम्पादकीय " में प्राप्त जानकारी है।

२.६] अन्य रचनाओं का विवरण :-

डॉ. रांगेय राधवने डेढ- सौं से भी अधिक पुस्तकें लिखी है। सम्पूर्ण साहित्य भिन्न-भिन्न रूप में लिखा है। अत: रांगेय राधव की अन्य साहित्यगत रचनाओं का वर्णन निम्न जैसा है :-

डॉ. रांगेय राधव की रचनाएँ

अ] सृजनात्मक साहित्य		आ] उपयोगी साहित्य	
१]	काव्य	१]	समाजशास्त्र
२]	नाटक	२]	इतिहास
३]	निबन्ध	३]	विज्ञान
४]	रिपोर्ताज		
५]	आलोचना		
६]	शोधग्रन्थ		
७]	महान उपन्यास		
८]	प्राचीन विश्व कहानियाँ		
९]	अभिजात कृतियों का पश्चिम देनेवाली रचनाएँ		
	संस्कृत के अभिजात कृतियों का अनुवाद.		
१०]	अनुवाद -		
	अंग्रेजी के अभिजात कृतियों का अनुवाद		

ब] सृजनात्मक साहित्य :-

१] का व्य :-
===========

१] मेधावी

२] पिघलते पत्थर

३] किरणें बुहार की

४] अजेय खण्डहर

५] राह के दीपक

६] रूप छाया

७] पंचशिला

८] पांचाली

९] श्यामला

१०] बंधन मुक्ता

११] काव्य - कलश

१२] विजयिनी

१३] मिटते चिन्ह

१४] आर्या

१५] उत्तरायण

१६] यात्रा के पल

१७] मृत्युंजय ज्वाला

२] ना ट क
===========

१] इन्द्रधनुष्य [एकांकी संग्रह]

२] स्वर्ग भूमि का यात्री

३] विस्फक

४] रामानुज

५] आखिरी धब्बा

३] निबन्ध
===========

१] संगम और संघर्ष

२] कालविजय

४] रिपोर्ताज
============

१] तूफानों के बीच

५] आ लो च ना :-

१] आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और शृंगार।

२] आधुनिक हिन्दी कविता में विषय और शैली।

३] काव्य, कला और शास्त्र।

४] काव्य : यथार्थ और प्रगती।

५] काव्य के मूल विवेच्य।

६] समीक्षा और आदर्श।

७] चन्द्रावली नाटिका।

८] महाकाव्य विवेचन।

९] भारतीय सन्त परम्परा और समाज।

११] भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका।

१२] हिन्दी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपाठिका।

१३] तुलसीदास का कथाशिल्प।

६] शो ध प्र ब न्ध :-

१] गोरक्षनाथ [गोरखनाथ और उनका युग]

७] महान उपन्यास :-

१] संसार और महान उपन्यास

८] प्राचीन विश्व कहानियाँ :-

१] प्राचीन यूनानी कहानियाँ

२] प्राचीन रोमन कहानियाँ

३] प्राचीन ट्यूटन कहानियाँ.

४] प्राचीन ब्राम्हण कहानियाँ

५] संसार की प्राचीन कहानियाँ

६] प्राचीन प्रेम और नीती कहानियाँ

७] अन्तर्मिलन की कहानियाँ

८] ईरानी कथाएँ.

९] फारसी कथाएँ

१०] एशियायी कथाएँ

११] युरोपिय कथाएँ

१२] हैलनिक कथाएँ

१३] फ्रेंच कथाएँ

९] अभिजात कृतियों का परिचय देनेवाली रचनायें :-

१] चीनी कवि लाओत्सु का काव्यलोक

२] कोमल कवि स्टीवेन्सन का काव्यलोक

३] महाकवि होमर का काव्यलोक

४] महाकवी टेनिसन का काव्यलोक

५] महाकवि गेटे का काव्यलोक

६] महाकवि मायकोवस्की का काव्यलोक

७] महाकवि यूरेपिडिज का काव्यलोक

८] महाकवि शेक्सपियर का काव्यलोक

९] महाकवि चौसर का काव्यलोक

१०] होरेस की काव्य कला

१०] अनुवाद :-

क] संस्कृत की अभिजात कृतियों का अनुवाद

१]	मेघदुत	५]	कुमार संभव
२]	दशकुमार चरित	६]	ऋतु संहार
३]	मुद्रारक्षस	७]	गीतगोविंद
४]	मृच्छकटिक	८]	भामिनी विलास

ख] अंग्रेजी की अभिजात कृतियों का अनुवाद :-

१]	हैम्लेट	६]	रोमियों ज्युलिअट
२]	तिल का ताड	७]	वेनिस का सौदागर
३]	ओथेलो	८]	बारहवी रात
४]	तूफान	९]	जूलियस सीजर
५]	मैकबेथ	१०]	भूल - भुलैया
११]	निष्फल प्रेम	१७]	इंडीयस
१२]	जैसा तुम चाहो	१८]	मन के बंधन
१३]	एक सपना	१९]	आयबेन्ही
१४]	परिवर्तन	२०]	शिल्पी का प्रेम
१५]	सम्राट लियर	२१]	रूप की ज्वाला
१६]	एन्टीगोने		

*** अन्य अनुवाद :-

१] समाजशास्त्र :-

१] संस्कृति और समाजशास्त्र भाग - १, २
२] संस्कृति और मानव्यशास्त्र
३] सामाजिक समस्याएँ और विघटन
४] समाजिक समस्याएँ और रितिरिवाज
५] अपराधशास्त्र

२] इतिहास :-

१] प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास

डॉ. रांगेय राघव के समग्र रचनाओं के संदर्भ में निम्नप्रकार का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जा सकता है -

अ] १] प्रकाशित रचनाएँ = १२२

२] अप्रकाशित रचनाएँ = २८

कुल = १५०

आ] १] साहित्य से संबधित रचनाएँ = १४३

[अनुदित रचनाएँ जोडकर]

२] अनुदित रचनाएँ ३०

३] उपयोगी साहित्य ७

कुल = १५०

क] १] सहयोंगी रचना १

१५१

ड] पुरस्कृत रचनाएँ :-

शीर्षक

१] मेधावी — हिन्दुस्तानी साहित्य अकादमी

२] प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास — डालमियाँ पुरस्कार

३] कब तक पुकारूँ — उत्तर प्रदेश शासन

४] पक्षी और आकाश — उत्तर प्रदेश शासन

५] मेरी प्रिय कहानिआँ राजस्तान साहित्य अकादमी डॉ. रांगेय राघवने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की वृध्दी की। उनकी सेवा को देखकर और प्रभावित होकर, राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा [महाराष्ट्र] ने उन्हे सन १९६६ में, मरणोपरान्त " महात्मा गाँधी पुरस्कार " से पुरस्कृत किया। सह पुरस्कार अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मलेन, बारहवाँ अधिवेशन, औरंगाबाद [मराठवाडा] में प्रदान

किया गया। उक्त पुरस्कार का स्वीकार श्रीमती सुलोचना राधवने किया।

*** साहित्यगत सामान्य परिचय :-

डॉ॰ रांगेय राधवने वैसे किशोरावस्था से ही लेखनारंभ किया था। सन १९३७ से १९६२ तक लिखते रहे। उन्होंने कुलमिलाकर १५१ तक पुस्तकें लिखी हैं। कहानी, उपन्यास, काव्य, नाटक, निंबन्ध रिपोर्ताज, आलोचना, समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञानपर अनुवाद, कृतियाँ अभिजात कृतियोंका साहित्यगत परिचय देनवाली रचनाएँ आदि अनेक प्रकार की पुस्तके लिखी हैं। उनकी प्रकाशित सब पुस्तकें मिलती हैं।

XXXXXXXXXXXX

// आ ध्या य - दू स रा //

-: सं न्द र्भ - सू ची :-

१] डॉ॰ रांगेय राघवने स्वंय तैयार की हुयी मूल सूची " कथाकार रांगेय राघव " ले॰ डॉ॰ कमलाकर गंगावणेजी को प्राप्त थी। डॉ॰ कमलाकर गंगावणेजी के अपर्युक्त किताब में सें प्राप्त जानकारी। पृ॰ ३६ से ५० तक।

२] पृ॰५० पर, ब] " कहानी " शीर्षक की जगह " ग्यारह कहानी संग्रह " शीर्षक संकलन " ले॰ डॉ॰ रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ, पहला भाग में " सम्पादकीय " में से प्राप्त जानकारी हैं। यह सामग्री शिवाजी युनिव्हर्सिटी लाईब्ररी, कोल्हापूर में प्राप्त है।

३] डॉ॰ रांगेय राघवने स्वंय तैयार की हुयी मूल सूची " कथाकार रांगेय राघव " ले. डॉ॰ कमलाकर गंगावणेजी को प्राप्त थी। डॉ॰ कमलाकर गंगावणेची के उपर्युक्त किताब में से प्राप्त जानकारी। पृ॰ ५० से ५६ तक।

=-=-=-=-=-=-=-=

12445
A